Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IV, Issue No. VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उग्रवाद की भूमिका

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. IV, Issue No. VIII, October-2012, ISSN 2230-7540

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उग्रवाद की भूमिका

Dr. Ashok Arya*

Lecturer, Department of Political Science, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan

शोधपत्र सारांश:- *प्रस्तुत पत्र में, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उग्रवाद की भूमिका का एक ऐतिहासिक अध्ययन किया गया है। उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में एक नई पार्टी का उदय हुआ, जो पुराने नेताओं के आदर्शों और तरीकों की कट्टर आलोचक थी। ये नाराज तरुण लोग चाहते थे कि कांग्रेस का उद्देश्य स्वराज होना चाहिए, जिसे उन्हें आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता के साथ हासिल करना चाहिए। इस नई पार्टी को पुराने उदारवादियों की तुलना में उग्रवादी कहा जाता है। उदारवादियों के लंबे प्रयासों के बावजूद, मूल रूप में कुछ भी हासिल नहीं किया जा सका। यह समझा जाता है कि सरकार ने उदारवादियों के प्रयासों को कमजोरी का संकेत माना है। इसलिए, बंकिम चंद्र चटर्जी, अरविंद घोष, बाल गंगाधर तिलक जैसे नेताओं ने उदारवादियों की आलोचना करते हुए, मजबूत दबाव के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्त करने की बात कही। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इस चरण में, एक तरफ उग्रवादियों को चलाया गया और दूसरी तरफ क्रांतिकारी आंदोलनों को। दोनों एकमात्र उद्देश्य, ब्रिटिश राज्य से मुक्ति और पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति के लिए लड़ रहे थे। एक ओर, उग्रवादी विचारधारा के लोग ब बहिष्कार आंदोलन 'के आधार पर लड़ रहे थे, दूसरी ओर, क्रांतिकारी विचारधारा के लोग बम और बंदूकों के इस्तेमाल से आजादी हासिल करना चाहते थे। जबकि चरमपंथी शांतिपूर्ण सक्रिय राजनीतिक आंदोलनों में विश्वास करते थे, क्रांतिकारियों ने ब्रिटिशों को भारत से बाहर निकालने के लिए शक्ति और हिंसा के उपयोग में विश्वास किया। बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय और विपिन चंद्र पाल ने भारत में उग्रवादियों ने राष्ट्रवाद के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।*

शब्द कुंजियाँ - *उग्रवादियों का उदय, अतिवाद के कारण, लाजपत राय का कथन, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उग्रवाद के उदय और उग्रवादियों की भूमिका*

----------X----------

परिचय:-

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इस चरण में, एक तरफ उग्रवादियों को चलाया गया और दूसरी तरफ क्रांतिकारी आंदोलनों को। दोनों एकमात्र उद्देश्य, ब्रिटिश राज्य से मुक्ति और पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति के लिए लड़ रहे थे। एक ओर, उग्रवादी विचारधारा के लोग ने बहिष्कार आंदोलन 'के आधार पर लड़ रहे थे, दूसरी ओर, क्रांतिकारी विचारधारा के लोग बम और बंदूकों के इस्तेमाल से आजादी हासिल करना चाहते थे। जबकि चरमपंथी शांतिपूर्ण सक्रिय राजनीतिक आंदोलनों में विश्वास करते थे, क्रांतिकारियों ने ब्रिटिशों को भारत से बाहर निकालने के लिए शक्ति और हिंसा के उपयोग में विश्वास किया। बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय और विपिन चंद्र पाल ने भारत में आतंकवादी राष्ट्रवाद के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह आंदोलन इन नेताओं के कुशल नेतृत्व में ही पनपा। तिलक का मानना था कि "हीन स्वदेशी सरकार अच्छी विदेशी सरकार से बेहतर है"। तिलक ने 'गणपति उत्सव' और 'शिवाजी उत्सव' की शुरुआत की और भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना फैलाने की कोशिश की।

उद्देश्य:-

1. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उग्रवादियों का ऐतिहासिक अध्ययन किया गया है।
2. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उग्रवाद के विकास पर चर्चा की गई है।
3. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उग्रवादियों के प्रभाव का वर्णन किया गया है।

www.ignited.in

परिकल्पना:

1. विद्रोहियों ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

2. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उग्रवादियों का प्रभाव बढ़ रहा है।

3. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में, उग्रवादियों ने स्वतंत्रता के लिए प्रयास किया।

अध्ययन विधि और आंकड़ों का संग्रह:

प्रस्तुत अध्ययन के लिए ऐतिहासिक अध्ययन पद्धति का उपयोग किया जाता है। इस अध्ययन के लिए ऐतिहासिक दृष्टिकोण का उपयोग किया जाता है। अध्ययन में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों आंकड़ों को शामिल किया गया है। प्राथमिक डेटा का संग्रह प्रत्यक्ष सर्वेक्षण, साक्षात्कार, अवलोकन, प्रश्नावली और अनुसूची आदि के माध्यम से किया गया है। माध्यमिक डेटा का संकलन डायरी, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और विभिन्न वेबसाइटों और पुस्तकों के माध्यम से किया गया है। इस अध्ययन की प्रकृति वर्णनात्मक है।

उग्रवादियों का उदयः

उदारवादियों के लंबे प्रयासों के बावजूद, मूल रूप में कुछ भी हासिल नहीं किया जा सका। यह समझा जाता है कि सरकार ने उदारवादियों के प्रयासों को कमजोरी का संकेत माना है। इसलिए, बंकिम चंद्र चटर्जी, अरविंद घोष, बाल गंगाधर तिलक जैसे नेताओं ने उदारवादियों की आलोचना करते हुए, मजबूत दबाव के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्त करने की बात कही। बंकिम चंद्र चटर्जी ' जैसे लोगों ने कांग्रेस की नीतियों का विरोध किया था और कहा था कि कांग्रेस के लोग पदों के भूखे राजनेता थे। अरविंद घोष ने भी 1993 में लेखों की एक श्रृंखला में कहा था कि कांग्रेस मज़दूर वर्ग से दूर है, राष्ट्रवादी है और पूरी तरह से विफल रही है। अपने शासकों को खुश करने के डर से इसे न कहने की नीति को कायरता कहा गया। इनके अनुसार, कांग्रेस तपेदिक से मरने वाली है।

उग्रवाद के कारणः

लगातार कांग्रेस की मांगों के प्रति ब्रिटिश सरकार द्वारा अपनाई गई उपेक्षापूर्ण नीति ने कांग्रेस के युवा नेताओं, जैसे बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय और विपिन चंद्र पाल को अंदर जाने के लिए प्रेरित किया। इन युवा नेताओं ने उदारवादी नेताओं की राजनीतिक भीख में कोई विश्वास नहीं व्यक्त किया। उन्होंने सरकार से उनकी मांगों को प्राप्त करने के लिए कठोर कदम उठाने की आवश्यकता पर बल दिया।

हिंदू धर्म के पुनरुत्थान ने भी उग्रवाद के उदय में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कांग्रेस के उदारवादी नेताओं ने पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति के प्रति अपनी पूर्ण निष्ठा व्यक्त की, लेकिन दूसरी ओर स्वामी विवेकानंद, दयानंद सरस्वती, तिलक, लाला लाजपत राय, अरविंद घोष और विपिनचंद्र पाल जैसे लोग थे, जिन्होंने अपनी सभ्यता और संस्कृति को श्रेष्ठ बनाया पश्चिमी संस्कृति को प्रमाणित किया। अरविंद घोष ने कहा कि "स्वतंत्रता हमारे जीवन का उद्देश्य है और हिंदू धर्म हमारे उद्देश्य की पूर्ति करेगा। राष्ट्रवाद एक धर्म है और यह भगवान का उपहार है। ऐनी बेसेंट ने कहा कि" संपूर्ण हिंदू प्रणाली पश्चिमी सभ्यता से श्रेष्ठ है।"

1876 और 1900 के बीच, भारत लगभग 18 बार अकाल की चपेट में रहा था, जिससे धन का बड़ा नुकसान हुआ था। 1897-1898 ई। में, बॉम्बे में प्लेग बीमारी के कारण लगभग 1 लाख, 73 हजार लोग मारे गए थे। सरकार ने इस दिशा में कोई प्रयास नहीं किया, जिससे बीमारी को रोका जा सके, बल्कि, प्लेग की जाँच के बहाने भारतीयों के घरों में उनकी बहन-बेटियों के साथ अमानवीय और बर्बर व्यवहार किया गया। तिलक ने अपने पत्र 'केसरी' में सरकार के काले कृत्य की कड़ी आलोचना की, जिसके लिए उन्हें 18 महीनों तक कड़े पहरे में जेल में रहना पड़ा। प्लेग के समय की ज्यादतियों से प्रभावित होकर पूना के 'चापेकर बंधुओं' (दामोदर और बालकृष्ण) ने प्लेग अधिकारी रैंड और अमरस्ट को गोली मार दी। इन घटनाओं ने निस्संदेह कट्टरपंथी राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित किया।

लॉर्ड बेकन का यह कथन कि 'अधिक दुर्बलता और आर्थिक असंतोष क्रांति को जन्म देता है' भारत के संदर्भ में शाब्दिक रूप से सत्य है, क्योंकि ब्रिटिश की तीव्र आर्थिक शोषण नीति ने सचमुच भारत में उग्रवाद को जन्म दिया। शिक्षित भारतीयों को रोजगार से दूर रखने की सरकार की नीति ने भी अतिवाद को जन्म दिया। दादाभाई नौरोजी ने 'ड्रेन थ्योरी' का प्रतिपादन करके ब्रिटिश राज्य की शोषण नीतियों का खुलासा किया। गोविंद रानाडे की पद ऐसे भारतीय अर्थशास्त्र में, रमेश चंद्र दत्त की GOV भारत का आर्थिक इतिहास 'आदि पुस्तकें। अंग्रेजी राज्य की आर्थिक नीतियों के ढोल को उजागर किया। यह नेताओं को उग्रवाद और स्व-शासन की ओर उन्मुख करता है।

तत्कालीन अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं ने भी चरमपंथी तत्वों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मिस्र, फारस और तुर्की में सफल स्वतंत्रता संग्राम ने भारतीयों को बहुत प्रोत्साहित किया। 1896 ई। में, अफ्रीका के पिछड़े और छोटे राष्ट्र, अबीसीनिया या इथियोपिया ने इटली को हराया। 1905 ई। में जापान की रूस पर

विजय ने वास्तव में आतंकवादी राष्ट्रवादियों को प्रोत्साहित किया। गैरेट ने माना कि "इटली की हार ने 1897 में लोकमान्य तिलक के आंदोलन को एक महान प्रोत्साहन दिया।"

लॉर्ड कर्जन की प्रतिक्रियावादी नीतियों ने भारतीय युवा दिमाग पर एक मजबूत प्रतिक्रिया दी। कर्जन के सात साल के शासन को 'प्रतिनिधिमंडल की आयु, त्रुटियां और आयोग' कहा जाता है। कर्जन के प्रतिक्रियात्मक कार्यों, जैसे 'कलकत्ता निगम अधिनियम', 'विश्वविद्यालय अधिनियम' और 'बंगाल का विभाजन' ने भारत में उग्रवाद को बढ़ाने में महत्वपूर्ण कार्य किया।

बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय और विपिन चंद्र पाल ने भारत में आतंकवादी राष्ट्रवाद के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह आंदोलन इन नेताओं के कुशल नेतृत्व में ही पनपा। तिलक का मानना था कि "स्वदेशी सरकार एक अच्छी विदेशी सरकार से बेहतर है और" स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा। "तिलक ने च गणपति उत्सव" और न् शिवाजी उत्सव 'की शुरुआत की और भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना फैलाने की कोशिश की।

लाजपत राय का कथनः

लाला लाजपत राय ने कहा- "अंग्रेज भिखारियों से ज्यादा नफरत करते हैं और मुझे लगता है कि भिखारी नफरत करने वाले भी होते हैं। इसलिए यह साबित करना हमारा कर्तव्य है कि हम भिखारी नहीं हैं।" विपिन चंद्र पाल ने बंगाल के युवाओं का नेतृत्व किया। उन्हें बंगाल में 'तिलक का सेनापति' माना जाता है। कुछ अन्य महत्वपूर्ण कारण, जैसे उपनिवेश में भारतीयों के साथ दुव्र्यवहार, जातीय कटुता और भारतीयों के साथ अपमानजनक व्यवहार, भारत में कट्टरपंथी राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने के लिए भी जिम्मेदार थे।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उग्रवाद के बढ़ने के कारणः

उदारवादियों के लंबे प्रयासों के बावजूद, मूल रूप में कुछ भी हासिल नहीं हुआ, यह समझा गया कि सरकार ने उदारवादियों के प्रयासों को कमजोरी की निशानी के रूप में स्वीकार किया है। इसलिए, बंकिम चंद्र चटर्जी, अरविंद घोष और बालगंगाधर तिलक जैसे नेताओं ने उदारवादियों की आलोचना करते हुए, मजबूत दबाव के माध्यम से सत्ता हासिल करने का रास्ता अपनाने की बात कही। बालगंगाधर तिलक के अनुसार "किसी को राजनीतिक अधिकारों के लिए लड़ना पड़ता है। उदारवादी पार्टी का विचार है कि ये अधिकार प्रेरणा से प्राप्त किए जा सकते हैं। हमारा विचार है कि उनका अहसास केवल मजबूत दबाव से ही हो सकता है। उग्रवादियों के विपरीत, लोगों को क्रांतिकारी विचारधारा बम और बंदूकों के इस्तेमाल से आजादी हासिल करना चाहती थी। जबकि उग्रवादी शांतिपूर्ण लेकिन सक्रिय राजनीतिक आंदोलनों में विश्वास करते थे, क्रांतिकारी अंग्रेजों को भारत से भगाने के लिए सत्ता और हिंसक उपायों में विश्वास करते थे।

इन दोनों के उदय के मुख्य कारण निम्नलिखित थे।

1. अंग्रेजी साम्राज्य की प्रकृतिः -

प्रारंभिक राष्ट्रवादी नेताओं ने अपने अध्ययन और लेखन के माध्यम से, भारत में अंग्रेजी राज्य के वास्तविक स्वरूप के लोगों को समझाने की कोशिश की। उन्होंने आंकड़ों से साबित किया कि अंग्रेजी राज्य और उसकी नीतियां भारत की दुर्बलता का मूल कारण हैं। दादा भाई नौरोजी ने लोगों को अंग्रेजी राज्य की शोषणकारी नीतियों से अवगत कराया और कहा कि अंग्रेज भारत को लूटने में लगे हुए हैं और ये भारत की आर्थिक कमजोरी का एकमात्र कारण हैं। श्री रमेश चंद्र दत्त और जी.के. बी। जोशी ने ब्रिटिश भूमि प्रणाली का सही मूल्यांकन किया और श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने स्पष्ट किया कि सेवाओं की भर्ती में अंग्रेजों की कथनी और करनी में बहुत अंतर है। शुरुआत से, कांग्रेस ने देश के बढ़ते हुए दुर्बलता की ओर ध्यान आकर्षित किया और हर साल इससे संबंधित एक प्रस्ताव पारित किया गया। इसके लिए, सैन्य और असैन्य पदों पर नियुक्त यूरोपीय लोगों को दिया जाने वाला उच्च वेतन, गृह शासन का तेजी से बढ़ता खर्च, भेदभावपूर्ण आयात-निर्यात नीति, अदूरदर्शी भूमि कर नीति, भारत के औद्योगिकीकरण के प्रति उदासीनता और भारतीयों के लिए अच्छा है। पदों और सेवाओं आदि के कई कारणों को जिम्मेदार ठहराया। 1892 और 1905 के बीच हुई विभिन्न घटनाओं और सरकारी कार्यों ने राष्ट्रवादियों को शासन में मूलभूत परिवर्तनों के बारे में सोचने के लिए मजबूर किया। 1892 का काउंसिल ऑफ इंडिया एक्ट एक पूर्ण बाह्य प्रदर्शन था, जिसमें से कुछ भी मूल रूप से हासिल नहीं किया गया था। कलकत्ता अधिनियम को 1899 में मंजूरी दी गई थी जिसके द्वारा कलकत्ता के निगम को पूरी तरह से सरकारी बना दिया गया था। कलकत्ता निगम के सदस्यों की कुल संख्या 75 से घटाकर 50 कर दी गई। जिन 25 लोगों को कम किया गया, वे कलकत्ता के लोगों के प्रतिनिधि थे। इस व्यवस्था के परिणामस्वरूप निगम में यूरोपीय बहुमत हो गया। 1904 में, 'भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम' को मंजूरी दी गई थी।

इस अधिनियम ने सरकार के अधिकारों में वृद्धि की। "विद्रोह" शब्द की परिभाषा को व्यापक बनाया गया था। 1889 और

www.ignited.in

1898 की सरकारी गोपनीयता अधिनियम केवल सैन्य गोपनीयता से संबंधित थे। लेकिन १९०४ के अधिनियम द्वारा, सरकारी रहस्य और नागरिक मामलों के समाचार पत्रों की आलोचना के संबंध में भी कार्रवाई की जा सकती थी जो सरकार के लिए संदिग्ध लग रहे थे। 1897 में, लोकमान्य तिलक और कुछ अन्य समाचार पत्रों के संपादकों को सरकार द्वारा लोगों के बीच सरकार विरोधी भावनाएं भड़काने के लिए लंबे समय तक कारावास की सजा सुनाई गई थी। लॉर्ड कर्जन के भारतीयों के खिलाफ उठाए गए विभिन्न कदमों और ब्रिटिश सरकार के किसी भी काम की अयोग्यता ने भी राष्ट्रवादियों को मूलभूत परिवर्तनों के बारे में सोचने के लिए मजबूर किया। ब्रिटिश शासन में भी सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में किसी प्रकार के सुधार की संभावना नहीं थी। बुनियादी और तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में कोई उन्नति नहीं हुई। 1904 के भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम के बाद, विश्वविद्यालयों में व्यावहारिक रूप से कोई स्वतंत्रता नहीं थी। जिसे राष्ट्रवादियों ने भारतीय विश्वविद्यालयों पर एक कठोर नियंत्रण के रूप में भी देखा था। इस प्रकार, बढ़ते हुए राष्ट्रवादी भारतीयों ने यह माना कि स्व-सरकार आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास के लिए एक आवश्यक और मूलभूत आवश्यकता थी।

2. बढ़ते पश्चिमीकरण: -

भारतीय राष्ट्रवादियों की इस नई पीढ़ी ने देश में बढ़ते पश्चिमीकरण पर गहरी चिंता व्यक्त की। भारतीय जीवन, विचार और राजनीति में पश्चिम का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा था, जो भारतीय धर्मों और विचारों के लिए एक खुली चुनौती थी। बढ़ते पश्चिमीकरण के कारण भारतीय संस्कृति का प्रभाव धीरे-धीरे कम हो रहा था। ब्रिटिश शासक पश्चिमी सभ्यता के साथ भारतीय राष्ट्रवाद की पहचान को जोड़ने में लगे हुए थे। भारत उदारवादियों की बौद्धिक और भावनात्मक प्रेरणा का स्रोत था और उन्होंने भारत के इतिहास में भारतीय नायकों की कहानियों से प्रेरणा ली। बंकिम चंद्र, स्वामी विवेकानंद और स्वामी दयानंद के लेखन ने उन्हें प्रभावित किया। स्वामी विवेकानंद ने भारतीय वेदान्त से नवयुवकों में आत्म विश्वास पैदा किया और उनकी प्राचीन परंपराओं और विरासत में एक नया विश्वास पैदा किया। स्वामी दयानंद ने बताया कि वैदिक काल में जब भारत में एक उच्च सभ्यता, संस्कृति और धर्म विकसित हो रहा था, तब यूरोपीय अशिष्टता और अज्ञानता से घिरे थे।

3. कांग्रेस की उपलब्धियों से असंतोष: -

15-20 साल की अवधि में कांग्रेस की उपलब्धियों से युवा संतुष्ट नहीं थे। वह शांतिपूर्ण और संवैधानिक तरीकों के आलोचक बन गए। उन्हें अंग्रेजों के न्याय और समानता में कोई विश्वास नहीं था। उन्होंने 'राजनीतिक शिक्षा' के रूप में नामकरण, प्रार्थना और प्रतिवाद जैसे उपायों की कड़ी आलोचना की। उन्होंने भारत से यूरोपीय साम्राज्यवाद को समाप्त करने के लिए यूरोपीय तरीकों को अपनाने पर जोर दिया। कांग्रेस की नई पीढ़ी, जिसे अग्रवाडी भी कहा जाता है, पुरानी पीढ़ी के किसी भी काम से असंतुष्ट थी। उनके अनुसार, कांग्रेस का तमसपहपवद राजनीतिक धर्म 'केवल क्राउन को राजसत्ता दिखाना था, राजनीतिक उद्देश्य केवल अपने लिए प्रांतीय या केंद्रीय विधान परिषदों में सदस्यता प्राप्त करना और उनके चवसपजपबंस राजनीतिक कार्यक्रम - केवल भाषण देना और कांग्रेस में शामिल होना हर साल दिसंबर में सत्र होता था। उन पर केवल मध्यवर्गीय बुद्धिजीवियों के लिए काम करने का आरोप लगाया गया और कांग्रेस की सदस्यता इस मध्यवर्गीय लोगों तक सीमित थी। उन्हें डर है कि अगर आम लोग इन आंदोलनों में आते हैं, तो उनका नेतृत्व समाप्त हो जाएगा, इसलिए देशभक्ति के नाम पर व्यापार करने के उदारवादियों पर आरोप लगाते हैं ।

4. अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव: -

विदेशों में होने वाली विभिन्न घटनाओं ने राष्ट्रवादी क्रांतिकारियों को काफी प्रभावित किया। ब्रिटिश विरोधी भावनाओं को मुख्य रूप से दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के साथ दुर्व्यवहार, साथ ही साथ मिस्र, ईरान, तुर्की और रूस के राष्ट्रवादी आंदोलनों द्वारा प्रबलित किया गया था। 1868 के बाद आधुनिक जापान के उदय ने साबित कर दिया कि पश्चिमी देशों के नियंत्रण या सहयोग के बिना एशियाई राष्ट्र अपना विकास कर सकते हैं। 1896 में इथियोपिया की इटली पर विजय और 1905 में रूस पर जापान की जीत से भारतीय राष्ट्रवादी अत्यधिक प्रभावित हुए और इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ा। अब यह स्पष्ट हो गया था कि यूरोप अजेय नहीं है।

5. शिक्षा का विकास: -

भारत में शिक्षा के विकास के साथ, पश्चिमी विचारों, राष्ट्रवाद और लोकतंत्र के बारे में राजनीति के मौलिक विचारों ने भारतीयों को बहुत प्रभावित किया। अधिकांश शिक्षित लोग क्रांतिकारियों और आतंकवादियों की नीतियों के समर्थक बन गए। जिनके लिए स्वराज्य का अर्थ था "विदेशी नियंत्रण से पूर्ण स्वतंत्रता जो हमारे राष्ट्र की नीतियों और प्रबंधन में पूर्ण स्वतंत्रता है" उस समय आर्थिक राजनीतिक और सांस्कृतिक विकास के लिए स्व-सरकार की आवश्यकता महसूस की गई थी।

6. भारत की बिगड़ती आर्थिक स्थिति: -

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में यानी 1876 से 1900 के बीच देश में 18 अकाल पड़े थे। जिसके कारण अपार जन-धन की हानि हुई। 1896-97 और 1899-1900 के बीच, बॉम्बे और आस-पास के इलाकों में प्लेग की बीमारी के कारण लगभग 1 लाख 73 हजार लोगों ने अपनी जान गंवाई, जबकि सरकार की किसी भी तरह की सहायता के बजाय, यह भारतीयों के साथ उल्टा था और अमानवीय बर्बर उपचार था किया गया, तिलक ने सरकार के व्यवहार की कड़ी आलोचना की, जिसके कारण उन्हें 18 महीने सश्रम कारावास की सजा सुनाई गई। बाल गंगाधर तिलक ने कहा कि "सरकारी प्रयासों की तुलना में प्लेग हमारे लिए कम निर्दयी है।" दिल्ली दरबार 1902 में उस समय स्थापित किया गया था जब लोग भूख से मर रहे थे। सरकार के इस काम की बहुत आलोचना हुई और लोगों में व्यापक गुस्सा पैदा हुआ। प्लेग के समय ब्रिटिश सरकार की ज्यादतियों से परेशान होकर, छप्पकर बंधुओं ने 1899 में पूना के प्लेग अधिकारी रैंड और उसके एक साथी मिस्ट की गोली मारकर हत्या कर दी। इस प्रकार, सरकार की गलत नीतियों के कारण, राष्ट्रवाद। को भी प्रोत्साहित किया गया।

7. स्वाभिमान का विकास:

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक और विपिन चंद्र पाल जैसे नेताओं ने भारतीयों को स्वाभिमानी होना सिखाया और कहा कि सभी राष्ट्रवादियों को देश की जनता की शक्ति और क्षमता पर पूरा भरोसा है। उन्होंने लोगों को अपने प्रयासों से अपना भविष्य बनाने के लिए कहा। उन्होंने जनता के आक्रोश का पूरा समर्थन किया। संवैधानिक साधनों की क्षमता या उपयोग में उनका कोई विश्वास नहीं था ।

8. बंगाल का विभाजन:

1905 में लॉर्ड कर्जन के शासनकाल के दौरान, ब्रिटिश सरकार द्वारा बंगाल के विभाजन के निर्णय के कारण, पूरे देश में सार्वजनिक आक्रोश फैल गया। कर्जन के शासन के दौरान, कुछ और प्रतिक्रियात्मक कार्यों, जैसे कि कलकत्ता निगम अधिनियम और विश्वविद्यालय अधिनियम ने भी उग्रवादी कार्यों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संभवतः कर्जन का बंगाल विभाजन का निर्णय हिंदुओं और मुसलमानों के बीच शासन करने की नीति का एक हिस्सा था। जिसने यह स्पष्ट कर दिया कि प्रार्थना, विनती और सिर्फ प्रतिरोध व्यक्त करने से कुछ नहीं होने वाला है।

उग्रवादियों की भूमिका:

1906 के बाद, भारतीय राजनीति में कांग्रेस के भीतर उग्रवादी पार्टी के उदय के साथ, देश में क्रांतिकारी और उग्रवादी दल भी उभरे। चार प्रमुख कांग्रेसी नेताओं- बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, विपिन चंद्र पाल और अरविंद घोष ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया और अपने कार्यों का मार्गदर्शन किया। तिलक ने कहा, "स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा"ः राष्ट्रवादियों या आतंकवादियों ने स्वराज्य को अपना मुख्य लक्ष्य और उद्देश्य बनाया और उनके लिए स्वराज्य का अर्थ था "विदेशी नियंत्रण से पूर्ण स्वतंत्रता, जिसमें उनके राष्ट्र की नीतियां और प्रबंधन पूरी तरह से उदारवादियों के लिए हैं।", उदारवादियों के लिए, आत्म-सरकार अर्ध-साम्राज्य के भीतर एक औपनिवेशिक स्व-सरकार थी। दोनों दलों के मार्ग और डग पूरी तरह से अलग थे। उदारवादियों जैसे आतंकवादी और आतंकवादी संवैधानिक के भीतर अपनी मांगों को प्राप्त करने में विश्वास नहीं करते थे। गुंजाइश है। वह अपने अधिकारों के लिए याचना करने या उनकी आत्महत्या के लिए हिंसक प्रतिरोध, जन आंदोलन और दृढ़ संकल्प में विश्वास नहीं करता था। उसने अपने भड़काऊ भाषणों और स्वतंत्रता की एक मजबूत इच्छा को प्रकट करने की कोशिश की। आत्म-बलिदान के लिए। उन्होंने विदेशी वस्तुओं और राष्ट्रीय शिक्षा के बहिष्कार के महत्व पर बल दिया। उन्हें लोगों में बहुत विश्वास था और उन्होंने सार्वजनिक रूप से स्वराज हासिल करने का फैसला किया। सत्ता और समूह के प्रयास, इसलिए उन्होंने राजनीतिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए जन समूह के माध्यम से काम किया। विद्रोहियों ने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी वस्तुओं और राष्ट्रवाद और सत्याग्रह को अपनाने पर भी विशेष जोर दिया। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार बाद में एक शक्तिशाली हथियार के रूप में उभरा क्योंकि इसके माध्यम से लोगों से समर्थन प्राप्त करना आसान था। सरकार द्वारा नियंत्रित शिक्षण संस्थानों के स्थान पर एक राष्ट्रीय शिक्षा योजना बनाई गई। आतंकवादी पार्टी की देश सेवा में छात्रों को शामिल करने की योजना थी। मिलिटेंट्स ने सहकारी संगठन को प्रोत्साहित किया और स्वयंसेवक बैठकें स्थापित की गईं। विभागीय मामलों और गैर-हस्तक्षेप के झगड़ों को सुलझाने के लिए पचनरी समितियों का गठन किया गया था।

निष्कर्ष:

यद्यपि राष्ट्रीय आंदोलन में अतिवाद की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण थी, इसे एक सुव्यवस्थित राजनीतिक दर्शन नहीं कहा जा सकता। इस धारा से जुड़े लोग विभिन्न कार्यों के लिए विभिन्न विचारों और विभिन्न तरीकों के पैरोकार थे। जबकि

www.ignited.in

इसके समर्थक क्रांतिकारियों, कुछ गुप्त समर्थकों और कुछ आतंकवाद के खिलाफ सक्रिय रूप से भाग ले रहे थे। यहां तक कि इसके शीर्ष नेताओं, अरविंद, तिलक, पाल और लाजपत राय, के सभी शीर्ष नेताओं के अपने राजनीतिक आदर्शों और प्रथाओं में अंतर था और उनके विचार भी समय-समय पर बदलते रहे। मिलिटेंट नेताओं ने लोकतंत्र संविधान और प्रगति के बारे में बात की और राष्ट्रीय आंदोलन के सामाजिक आधार को व्यापक बनाना चाहते थे। उग्रवादियों को लगा कि बिना किसी प्रत्यक्ष कार्रवाई और दबाव के अंग्रेजों को भारत छोड़ना संभव नहीं था, इसलिए अन्याय के खिलाफ असहयोग और प्रतिरोध की नीति को सहयोग का आधार बनाया गया। साथ ही, इन लोगों ने जनता को असहयोग, अहिंसक प्रतिरोध, जन आंदोलन, आत्मनिर्भरता और पीड़ा का एक नया पाठ पढ़ाया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. Chinta Mani: Indian politics since the uprising, P. -38,39
2. A.C. Mazumdar: Indian National Evolution] P-22, 23
3. A.C. Mazumdar: Indian National Evolution] P-23, 24
4. Annie Beasant: How India*s Independence Decomposed, P.- 465,465
5. Navinson: The New Spirit in India, P -226, 227 A
6. Annie Beasant: India, Bound or Free, P- 162, 163, 167 A
7. Annie Beasant% How India Seeked Freedom] P& 566]567
8. Nehru J.L.: Clear teÛt, P.- 53,55, 57 A
9. Banerjee S.N.: Nation in Action, P-303, 305 A
10. शर्मा चतुर्भुजः रेबेल की आत्म कथा, चतुर्भुज प्रकाशन 33, पंडरिबा, लखनऊ संस्करण (2005), पृष्ठ -23 , 25, 29
11. सिंह बलवंतः उग्रवाद गजेटियर, 1989, पेज नम्बर 50।
12. दैनिक भास्कर, जयपुर संस्करण, 15 अगस्त 2010, पृष्ठ सं. 06
13. भारतीय राज व्यवस्था, पुखराज जैन, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।
14. भारतीय राजनीतिक चिंतन, बी एल फाडिया, कॉलेज बुक हाउस, जयपुर।

Corresponding Author

Dr. Ashok Arya*

Lecturer, Department of Political Science, Babu Shobha Ram Government Arts College, Alwar, Rajasthan